वैभवशाली सूर्य

मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में आयोजित आरती

सीधा वीडिओ प्रसारण

रविवार, १४ जनवरी, २०२४

गणेश राजामणि द्वारा प्रस्तुत वार्ता

नमस्कार!

सिद्धयोग वैश्विक हॉल में सभी का स्वागत करना मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है।

आज, १४ जनवरी को, मकर संक्रान्ति के सम्मान में हम आरती में भाग लेंगे, जिसका सीधा वीडिओ प्रसारण श्री मुक्तानन्द आश्रम स्थित भगवान नित्यानन्द मन्दिर से हो रहा है।

मेरा नाम गणेश राजामणि है। मैं अपने परिवार के साथ सैन डिएगो, कैलिफ़ोर्निया में रहता हूँ। वर्तमान में मैं श्री मुक्तानन्द आश्रम में विज़िटिंग सेवाकर्ता के रूप में रह रहा हूँ और शीत ऋतु के उत्सवों पर यहाँ सेवा करने आया हूँ।

मकर संक्रान्ति भारत में मनाया जाने वाला एक पर्व है जो सूर्यदेवता की पूजा के लिए समर्पित है। आज के दिन सूर्य की आराधना करने का उद्देश्य यह है कि उत्तरी गोलार्ध में यह वह समय है जब दिन का प्रकाश बढ़ने लगता है। सूर्य ने उत्तर दिशा की ओर अपनी छः माह की यात्रा आरम्भ कर दी है, इस यात्रा को उत्तरायण कहा जाता है।

सूर्य। वैभवशाली सूर्य, जिसकी परिक्रमा हमारी पृथ्वी करती है, जिसकी परिक्रमा हमारा समस्त सौरमण्डल करता है, उसे अनेक संस्कृतियों की परम्पराओं में एक उच्च स्थान दिया जाता है। विश्वभर में इसका पूजन, सम्मान व गुणगान किया जाता है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, शताब्दियों से वैज्ञानिकों ने भी सूर्य में अत्यधिक दिलचस्पी दिखाई है। यह काफ़ी हद तक उनकी खोज और अनुसन्धान का विषय रहा है। आज भी वैज्ञानिक सूर्य के विषय का अध्ययन कर रहे हैं—उसके चुम्बकीय क्षेत्र का, उसके स्पन्दनों का, पृथ्वी की जलवायु पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का—यह सब हमें अपने निकटतम नक्षत्र की अधिक जानकारी देता है [जो हमसे बस तिरानवे दशलक्ष मील दूर है!]

आज, चूँकि हम मकर संक्रान्ति का भारतीय पर्व मना रहे हैं, इसलिए मैं अपनी वार्ता में इस विषय पर केन्द्रित रहूँगा कि भारतीय परम्परा में सूर्य की पूजा कैसे की जाती है।

भारत के अनेक शास्त्रों में आप सूर्य की स्तुति में अतीव सुन्दर श्लोक पाएँगे। वे सूर्य का वर्णन इस रूप में करते हैं कि सूर्य जीवन का स्रोत है, यह समस्त जीवों की आत्मा है, यह अन्धकार को दूर करने वाला है, यह प्रज्ञान व दैवी ज्ञान का मूर्तरूप है, यह वह आलोक है जो विश्व का साक्षी है। और ये तो मेरे पसन्दीदा बस *कुछ ही* उदाहरण हैं; शास्त्रों में सूर्य के लिए इस प्रकार के प्रचुर वर्णन पाए जाते हैं।

सिद्धयोग पथ पर एक मूलभूत अभ्यास है, श्रीगुरुगीता का पाठ। श्रीगुरुगीता में श्रीगुरु को सूर्य की उपमा देकर यह कहा है कि यह गुरु द्वारा प्रदान किए जाने वाले ज्ञान का प्रकाश है। इस स्तोत्र में यह भी कहा गया है कि श्रीगुरु सूर्य के रूप में प्रकाशित हैं।

एक अन्य शास्त्र है जिसमें सूर्य की उपमा का प्रयोग किया गया है, वह है ऋग्वेद जिसका उद्‌गम प्राचीन भारत में हुआ है। इसी शास्त्र में सूर्य गायत्री मन्त्र है जो कि सूर्य की स्तुति है। यह ऋग्वेद का ऐसा मन्त्र है जिसका *सर्वाधिक* पाठ किया जाता है क्योंकि यह सहज सुलभ है और अत्यन्त शक्तिपूरित है। लाखों लोग सूर्य गायत्री मन्त्र को गाकर अपने दिन की शुरुआत करते हैं, और सूर्यास्त के समय भी वे इसे गाते हैं।

मैं बहुत छोटा था जब मैंने सूर्य गायत्री मन्त्र सीखा; मेरे पिता जी, दादा जी व मेरे चाचाओं ने मुझे इसे हर सुबह १०८ बार गाना सिखाया, और काफ़ी वर्षों तक मैंने इसे किया। इस मन्त्र का पाठ कर मुझे जिस शान्ति का अनुभव होता था, उसकी स्मृतियाँ आज भी मेरे मन में कितनी ताज़ा हैं। और आज, दशकों बाद भी, मैं इस गायत्री मन्त्र को गाता हूँ।

सूर्य गायत्री मन्त्र के शब्द इस प्रकार हैं :

ॐ भूर्भुवः स्वः

तत्सवितुर्वरेण्यं

भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

इस मन्त्र का अर्थ है :

ॐ। हे पृथ्वी, आकाश और स्वर्ग!
हम अपने अन्तर में
दिव्य सावित्री अर्थात् सूर्यदेवता की
प्रभा को स्थापित करें,
जो फिर हमारे अन्तर-बोध को जाग्रत करेंगे।

आपको यह ज्ञात होगा ही, पर मकर संक्रान्ति के सम्मान में मैं आपका ध्यान इस बात पर आकृष्ट करना चाहता हूँ कि सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर एक बहुत बढ़िया पृष्ठ है जहाँ सूर्य गायत्री मन्त्र की रिकॉर्डिंग दी गई है।

सूर्य गायत्री मन्त्र को एक विशिष्ट लय में गाया जाता है। साथ ही, अनेक गायकों ने इस मन्त्र के गाने की अपनी-अपनी धुन भी बना ली है। सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर दिए गए मन्त्र को वर्ष २०१८ में मकर संक्रान्ति के अवसर पर एक भारतीय सिद्धयोगी द्वारा संगीतबद्ध किया गया था जो एक सुप्रसिद्ध गायिका थीं।

आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर सूर्य गायत्री मन्त्र की इस रिकॉर्डिंग को सुन सकते हैं और इसके साथ-साथ गा भी सकते हैं। इस रिकॉर्डिंग की अवधि लगभग पैंतालीस मिनट है। आप सूर्योदय या सूर्यास्त के समय या फिर दिन के किसी भी समय और अपनी सुविधानुसार कितनी भी अवधि के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं। आप सूर्य गायत्री मन्त्र को स्वरसहित गा भी सकते हैं या मन ही मन इसका जप कर सकते हैं।

मैं तो यह कहूँगा कि भारत के शास्त्रों में मैंने सूर्य के विषय में और इसकी प्रचण्ड शक्ति के विषय में जो पढ़ा है, उसने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया है। इतना ही नहीं, सर्वशक्तिमान सूर्य की स्तुति में वास्तव में *पूरे के पूरे* शास्त्र रचे गए हैं।

उदाहरण के लिए, सूर्य उपनिषद् है जिसमें ऋषिगण उत्कृष्ट व काव्यात्मक रूप से सूर्य का वर्णन इस प्रकार करते हैं :

सूर्य से समस्त जीव उत्पन्न होते हैं।
सूर्य उन सभी का पोषण करता है।
सूर्य में वे सभी लय हो जाते हैं।
सूर्य जो है,
मैं वह हूँ।[१]

क्या सूर्य अत्यन्त अद्‌भुत, कौतूहलपूर्ण और पूर्णतः *मन्त्रमुग्ध कर देने वाला* नहीं है? और सिद्धयोग पथ पर, हमारे लिए, सूर्य आध्यात्मिक जागृति के भाव को जगाता है।

भारत में सूर्यदेवता के अनेक मन्दिर भी हैं। एक प्रसिद्ध मन्दिर है, पूर्वी भारत के ओड़िशा में स्थित कोणार्क सूर्यमन्दिर। UNESCO [यूनेस्को] ने इसे वैश्विक धरोहर स्थल की मान्यता दी है और इसका आकार एक विशाल रथ जैसा है। शास्त्रों में सूर्यदेवता को रथ पर आरूढ़ होकर आकाश में विचरण करते हुए चित्रित किया गया है।

एक अन्य प्रमुख मन्दिर है, पश्चिम भारत में गुजरात के मोढेरा में स्थित सूर्यमन्दिर। यह मन्दिर पत्थर को तराशकर उस पर की गई बारीक नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है जिसमें सूर्यदेवता और अन्य देवताओं के विभिन्न रूपों को अभिव्यक्त किया गया है।

***

भारत के मन्दिरों में किया जाने वाला एक अनुष्ठान है, वहाँ के अधिष्ठाता देवता की आरती। आरती करने का, विशेषरूप से प्रातः की आरती का, एक उद्देश्य यह है कि, जब हम आरती करते हैं तो उन देवता को नमन व उनका सम्मान कर अपने पूरे दिन में उसी दिव्यभाव को प्रकट होने देते हैं। इन देवताओं के भक्तों के लिए इस प्रातःकालीन आरती का असाधारण महत्त्व होता है। ये भक्तगण आरती में भाग लेना चाहते हैं क्योंकि उनमें यह ललक होती है कि देवता की प्रथम दृष्टि उन पर पड़े।

ब्राह्मण पुजारी मन्त्र गाकर मृदुलता से देवता को जगाते हैं। फिर, आरती शुरू होने पर भक्तगण भी उसे गाने लगते हैं। मन्दिर उनके स्वरों से और बजाए जाने वाले वाद्ययन्त्रों के संगीत से गूँज उठते हैं। यह बहुत शक्तिपूरित और आनन्ददायी अनुभव होता है, और यह बहुत पवित्र होता है। जब आरती गाई जा रही होती है, उन क्षणों में ऐसा लगता है मानो ब्रह्माण्ड का कण-कण भगवान के प्रकाश से जाग उठा हो।

गुरुदेव सिद्धपीठ, सिद्धयोग पथ का भारत स्थित सर्वप्रथम आश्रम है। यहाँ, हर सुबह, सूर्योदय से पहले, आरती द्वारा बड़े बाबा को नमन व उनका पूजन-वन्दन किया जाता है।

फिर, मध्याह्न में आरती होती है जब सूर्य आकाश में अपने चरम बिन्दु पर होता है।

और फिर, सायंकालीन आरती होती है जब सूर्य अस्ताचल की ओर बढ़ रहा होता है।

सिद्धयोग आश्रमों में गाई जाने वाली आरती, सिद्धयोग पथ का एक *अत्यन्त शक्तिपूरित* अभ्यास है। सचमुच, संगीत और शब्दों द्वारा, ध्वनियों और प्रकाश द्वारा जो शक्ति प्रवाहित होती है, वह स्पष्टतः महसूस की जा सकती है।

आज, जब श्री मुक्तानन्द आश्रम के ऊपर आकाश में सूर्य उदित हो रहा है, हम सब मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में आरती गाएँगे।

आप देखेंगे कि एक पुजारी बड़े बाबा के समक्ष दीपक से आरती करेंगे। पारम्परिक रूप से, दीपक द्वारा देवता की आरती करने के अनेक तरीक़े हैं। आरती करने के लिए, विभिन्न धातुओं से बनी, विभिन्न आकार व माप की थालियों व दीपों का उपयोग किया जाता है। सिद्धयोग आश्रमों में, विशेषकर महोत्सवों पर पुजारी बड़े आकार के आरती-दीप से आरती करते हैं, जिसमें अनेक मनोहर ज्योतियाँ होती हैं और जो हमारे अन्दर के प्रकाश का प्रतीक हैं।

जब पुजारी आरती करेंगे, तब संगीतकार नगाड़ा, शंख और घण्टा वादन करेंगे। जब पुजारी द्वारा आरती पूरी हो जाएगी, तब आप आरती गाएँगे।

मैं आपको आमन्त्रित करता हूँ कि आज, जब आप मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में आयोजित इस आरती में भाग लें, जब आप समस्त सिद्धयोग संघम् के साथ अपनी पूजा अर्पित करें, आप अपने बोध में एक अत्यन्त विशेष केन्द्रण को धारण करें :

आप भगवान नित्यानन्द के स्वर्णिम स्वरूप पर अपना ध्यान केन्द्रित करें
और कल्पना करें कि बड़े बाबा सूर्य का मूर्तरूप हैं।

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

[१] सूर्य उपनिषद्; ए. जी. कृष्ण वारियर, Sāmānya Vedānta Upaniṣads [चेन्नई : Adyar Library and Research Centre, १९६७], पृ. २६५-६६; अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन।